अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 1, मार्च 2026, पृष्ठ 453–457
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n1.2026.042

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का मानवतावादी धर्म

डॉ. संतोष कुमार *

प्राप्तिः 20 मार्च 2026 / स्वीकृतः 26 मार्च 2026 / प्रकाशितः 31 मार्च 2026
जर्नल वेबसाइटः https://anubodhan.org

सारांश

इस लेख के माध्यम से डॉ. अम्बेडकर के मानवतावादी विचारों के दृष्टिकोण के संदर्भ में संगृहीत किया गया है। डॉ. अम्बेडकर को एक समूह या वर्ग का ही उद्धार करने से सम्बन्धित नहीं समझा जाना चाहिए बल्कि उनके द्वारा स्त्री–पुरुष समानता, किसानों के उद्धार के संदर्भ में, शिक्षा, धर्म, राजनीतिक सुधार, कानून का शासन आदि जैसे अपने विचारों को डा. अम्बेडकर ने व्यवहारिक धरातल पर लागू करने का प्रयास किया अतः उनके सभी कार्य समाज में समता बनाने, सामाजिक संघर्ष का आधार मानवतावादी है। बाबा साहेब के किए गये कार्य सर्वसमाज, सभी वर्ग के हित में किये गये हैं।

बीज शब्द: समाज सुधारक, जातिविहीन समाज, स्त्री शिक्षा, स्त्री–पुरुष समानता, मानवतावादी धर्म, समानता

भारत में प्रचलित सामाजिक बुराइयों के सुधार हेतु बहुत से चिंतकों ने अपने विचार रखे जिसमें अधिकतर आधुनिक भारतीय इतिहास में सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलनों और अन्य जन आंदोलनों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए नील विद्रोह (बंगाल) यह विद्रोह शोषण के विरुद्ध लड़ाई थी। जिसे 'नील दर्पण' के लेखक दीनबंधु मित्र ने नील किसानों की दुर्दशा पर लिखा, वही 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण के पिता कहे जाने वाले राजा राममोहन राय प्रथम भारतीय थे जिन्होंने सबसे पहले भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों के विरोध में आंदोलन चलाया, जैसे सती प्रथा का प्रबल विरोध, ऐसे ही 'प्रार्थना समाज' की स्थापना 1867ई0 में हुआ था, उसका प्रमुख उद्देश्य जाति प्रथा का खण्डन करना, विधवा पुनर्विवाह, नारी शिक्षा को प्रोत्साहन देना था। ऐसे ही उपरोक्त सामाजिक सुधारकों की तरह ही समाज में प्रचलित बुराइयों, भेदभाव, छुआछूत के दौरान 14 अप्रैल 1891ई0 में मध्य प्रदेश में बाबा साहेब का जन्म हुआ जिन्होंने इन समाज की कुरीतियों का सामना प्रत्यक्ष तौर पर किया।

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर (दर्शनशास्त्र), द्रौपदी देवी विन्ध्याचल महाविद्यालय, सिंहोरवाँ अहिरौली, गोरखपुर ई-मेल: santoshmauryagorakhpur@gmail.com

डॉ0 अम्बेडकर समस्त मानवीय समाज को और विशेषतः भारतीय समाज को एक सावयव समष्टि के रूप में मान्यता देते है, जिसका पूरी तरह से प्रत्येक पक्ष और सन्दर्भ में स्वस्थ्य और संतुष्ट होना अनिवार्य है। जबकि व्यवहारिक धरातल पर भारतीय समाज का लगभग 40 प्रतिशत भाग इस प्रकार से उपेक्षित और शोषित था कि इसे मानव की संज्ञा ही नही दी जा सकती थी। अतः मानवीय समाज के समष्टि के उद्धार और सर्वागिण विकास के लिए आवश्यक था कि उपेक्षित वर्ग को भी प्रेम, समता और सम्मान देकर बराबर के स्तर पर लाया जाए और पूरे समाज को स्वस्थ्य और सम्पुष्टि बनाया जा सके।

डॉ. अम्बेडकर ने अंधविश्वास, जाति–भेद, असमानता, विषमता, श्रमिक और किसानों आदि के शोषण के विरुद्ध संघर्ष करते हुए यह स्थापित किया कि मानव का मानव के प्रति विश्वास और आदर होना सामूहिक जीवन की पहली शर्त है। इसी कारण वह बुद्ध और ईसा मसीह से अधिक प्रभावित थे वे बराबर कहते रहे कि "उस उदार व दयावान राजा को जनता कभी भी न स्वीकारे, जो जनता के हाथ में टूटा–फूटा व कड़वा तूंबा थमा दे।"[1]

डॉ. अम्बेडकर पूर्णतया मानवता–प्रेमी थे तभी तो उन्होंने कहा था कि एक समय आयेगा जब मुस्लिम लीग यह सोचने के लिए विवश होगी कि अखण्ड भारत सबके लिए श्रेष्ठ है। डॉ. अम्बेडकर समस्त मानव जाति के अस्तित्व के लिए संघर्ष–समर्पित राजनेता थे, वे उत्कृष्ट समाज–सेवी और जीवन मूल्यों के प्रवक्ता थे। वे उन संतों में से थे जिन्होंने सच्चाई के लिए अपने जीवन की परवाह नहीं किया।

डॉ. अम्बेडकर वास्तव में उपेक्षित, शोषितों और कमजोर वर्ग के मसीहा थे। वे सम्मान, न्याय, आाजादी व हक के लिये अंत तक घोर संघर्ष करते रहे। वे कष्ट को सहते व झेलते रहे लेकिन न कभी झुके और न समझौता किया।

डॉ. अम्बेडकर का सम्पूर्ण जीवन मनुष्य की स्वाधीनता, समता और सम्मानपूर्ण जीवन जीने की संघर्ष की कहानी है। भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने तथा शोषितों और पीड़ितों को सामाजिक न्याय दिलाने में उन्होंने पूरा जीवन अर्पित कर दिया था। इस दिशा में उन्होंने लगातार छः दशकों तक प्रयास किया।

एक मानवतावादी चिंतक के रूप मे डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को हीन भावना से ऊपर उठने की सलाह दी। उनको विश्वास था कि इनमें योग्यता की कमी नहीं है। ''बाबा साहब ने हिन्दू समाज में व्याप्त विषमता के उन्मूलन और सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए प्रयास किया सभी मनुष्यों को समान अधिकार मिले यह प्रश्न ही हिन्दू सामाजिक व्यवस्था की जड़ पर घातक प्रहार था, क्योंकि विषमता ही हिन्दू समाज की विलक्षणता का प्रमुख तत्व है।''[2]

डॉ. अम्बेडकर की निरन्तर यही सोच रही कि अछूत, दलित, मजदूर और आम आदमी कैसे सुखी हो पायेगा? वह सबसे अधिक मेहनत करता है, वह सबसे अधिक निष्ठावान और ईमानदार है। फिर भी उच्च वर्ग अमीर और पूँजीपति वर्ग उसका शोषण करते है, उसे अपमानित करते है और उसके साथ अमानवीय व्यवहार करते है लेकिन वह अभागा उनका विरोध नहीं कर सकता, क्योंकि उसके पास दो वक्त के लिए भर पेट

भोजन नहीं है, रहने के लिए आवास नहीं है और पहनने के लिए वस्त्र नहीं है, वह कोल्हू का बैल है, वह जिन्दगी की आम जरूरतों के लिए निरन्तर कठोर प्रयास करता है, फिर भी उसे अपने उद्देश्यों में सफलता नहीं मिल पाती है, ऐसा उसके साथ ब्रिटिश साम्राज्य में नहीं, अपितु स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात भी शोषण की परमपरागत अमानवीय चक्की में पिस रहा है।

'बोधिसत्व' संबोधन से सुशोभित डॉ. अम्बेडकर का समग्र चिंतन शोषित इन्सानों के लिए था। ''वे दलित वर्ग के लिए ज्यादा चिन्तित थे वे गरीबी को अपराध की जननी मानते थे और इसके लिए धनिक वर्ग को जिम्मेदार ठहराते थे। वह धनिक चाहे सत्ता में हो या चाहे धर्म में अथवा व्यापार में, वही धनिक राजनीति, धर्म और समाज के लिए सर्वाधिक खतरनाक और समस्त बुराइयों की जड़ है।''[3] डॉ. अम्बेडकर का समग्र चिंतन व कृतित्व मानवतावाद का पक्षधर नहीं था बल्कि उसी पर पूर्णतः आधारित ही था और लोकतान्त्रिक चेतना को जन–जीवन में उतारने और प्रवाहित करने के लिए प्रतिबद्ध थे। ''वे महान कर्मयोगी थे, उनमें आध्यात्मिक संकल्प था वह व्यक्ति के नहीं समाज के थे, वे विद्रोही नहीं समता के स्वर थे। निःसंदेह वे आधुनिक दुनिया के ऐसा अपराजेय योद्धा थे जो अन्याय, अत्याचार, विषमता, शोषण भेदभाव आदि के विरूद्ध आजीवन संघर्ष करते रहे।''[4]

डॉ. अम्बेडकर की सोच का सम्पुष्टिकरण निश्चित ही उदार सवर्ण और विशेषतः उदार प्रबौद्धिक ब्राह्मणों के कृत्यों और रचनाओं से अधिक प्रेरित हुआ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की अनेक कविताएं जैसे 'अछूत की आह', 'कमजोर की आह' में वीरू और बच्चा सिंह का विवाद ड्रामे की शक्ल में दर्शाया गया है। पंडित सोहन लाल द्विवेदी का 'असली भारत की तस्वीर', मैथिली शरण गुप्त और रामधारी सिंह दिनकर की 'अछूतोद्धार' पर लिखी गयी कविताएं व पंडित रामनरेश त्रिपाठी का विख्यात कविता–''तू ज्ञान हिन्दूओं में, ईमान मुस्लिमों में' आदि साहित्य इतने बड़े पैमाने पर सृजित किये गये जिन्होंने डॉ. अम्बेडकर की सोच को सम्पुष्टि किया।''[5] डॉ. अम्बेडकर ने अपने अनुयायियों से बुद्ध और नानक के मार्ग पर चलकर हिन्दू धर्मशास्त्रों को पूर्ण रूप से नकारने के लिए कहा। वे मानते थे कि ''हिन्दू धर्म में जाति व्यवस्था का आधार श्रम का विभाजन ही नहीं बल्कि यह श्रमिकों का विभाजन है। जिसमें उन्हें जन्म के आधार पर विभाजित कर एक सोपान की तरह एक के ऊपर एक रखा गया है जाति ने मानव–प्रेम की भावना को नष्ट कर दिया है। इसकी स्वस्थ्य जनमत के निर्माण में भी नकारात्मक भूमिका रही है।''[6] डॉ. अम्बेडकर स्वतंत्रता, समता और भातृत्व भावना के सबसे प्रखर व जीवन्त इंसान थे। उनके लिए कहा जा सकता है कि वह जो सोचते थे, वही करते थे, और जो करते थे, वह पूरे मानव समाज की सुख–शान्ति और उन्नति के लिए करते थे। डॉ. अम्बेडकर जिस सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक सदाचार और समानता के लिए आजीवन जी–तोड़ अथक प्रयास करते रहे, उसकी प्रतिष्ठा नहीं हो सकी। वे हिन्दू धर्म से जाति की अजगरी श्रृंखलाओं को नहीं काट सके बल्कि उन्हें ही विवश होकर अत्यन्त भारी मन से अपने व्रत को पूरा करने के लिए धर्म परिवर्तन की राह पकड़नी पड़ी। यथार्थतः वे हिन्दू धर्म के विरोधी नहीं थे। वे विरोधी थे हिन्दू धर्म में पनपी अमानवीय व्यवस्था व रीति–नीति के। वे विरोधी थे हिन्दू धर्म में व्याप्त असमानता के। ''उन्होंने हिन्दू धर्मशास्त्रों का गहन अध्ययन किया था तथा यह मालूम किया था कि उनमें

जाति–व्यवस्था जन्म से नहीं कर्म से जन्मी है, जिन्हें कालान्तर में जन्म से जोड़कर सवर्ण हिन्दू अपने में से एक वर्ण का शोषण करते रहना चाहते है।''[7] शोषितों के उद्धार के लिए बाबा साहब ने जो संघर्ष किया उससे उन्हें सामाजिक और आर्थिक अन्याय से पीड़ित मानवता के उद्धारक के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई। वे एक महामानव थे भारत में उनका जीवन सामाजिक सुधार के श्रेष्ठतम् कार्य को समर्पित था। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि–'राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर सकता है जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग, का अन्तर भूलाकर उनमें सामाजिक भातृत्व को सर्वोच्च ध्यान दिया जाय।'

डॉ. अम्बेडकर की भूमिका का मूल्यांकन उनके व्यक्तिगत जीवन अनुभवों के आधार पर ही संभव है। भारत की जिस सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध उन्होंने संघर्ष किया और वे बहुत हद तक सफल भी हुए उस व्यवस्था से वह व्यक्तिगत रूप से पीड़ित थे। एक बार बम्बई में बोलते हुए उन्होंने कहा था कि–'जहाँ मेरे व्यक्तिगत हित और देश हित में टकराव होगा वहाँ मैं देश हित को प्राथमिकता दूँगा।'

एक मानवतावादी चिंतक के रूप में डॉ. अम्बेडकर के पास प्रखर ऐतिहासिक दृष्टि थी वह मानते थे कि भारत के इतिहास का महानतम् और गौरवशाली काल मौर्य शासन काल था, अन्य सभी समयों में राष्ट्र को पराजय तथा अंधकार का मुहं देखना पड़ा। वे कहा करते थे कि ''भारतीय संस्कृति अपने आप में ऐसी संस्कृति है जो अनवरत चलेगी तथा सांस्कृतिक साम्राज्य का विस्तार करती रहेगी।'' [8]

यद्यपि आज डॉ. अम्बेडकर हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनका जीवनोन्मुखी चिन्तन और मानव मात्र के लिए की गई उनकी सेवांएं बरबस हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। यह महसूस कराती है कि वे केवल अछूतो के नहीं, वे केवल बौद्धों के नहीं और वे केवल उपेक्षितों के नहीं अपितु वे उन सबके थे जिनमें मानवता की खुशबू की रत्ती–भर भी पहचान थी। ''जीवन और समाज की सक्रियता वे धर्म से मानते थे। धर्म उनके जीवन आस्था से जुड़ा था।''[9] डॉ. अम्बेडकर का चिन्तन युग सापेक्ष होते हुए भी काल या समय विशेष की परिधि में बाधा नहीं जा सकता।

उपरोक्त विवेचनाओं के आधर पर निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि डॉ. अम्बेडकर का मानवतावाद ईश्वर के बजाय 'मनुष्य' को केन्द्र में रखता है। उनके अनुसार धर्म का उद्देश्य मनुष्य को दासता में रखना नही बल्कि नैतिक और सामाजिक विकास होना चाहिए।

सन्दर्भः

1. भटनागर, राजेन्द्र मोहन : डा. अम्बेडकर चिन्तन और विचार, एस. एन. प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली, 2002,

पृ0 206

2. विश्व एकता संदेश, अगस्त 1997, पृ0 180–181

3. गाबा, ओमप्रकाश : राजनीति चिन्तन की रूपरेखा, मयुर पेपर बैक्स, सेक्टर 5 नोएडा, पृ0 339–340

4. भटनागर, राजेन्द्र मोहन : डॉ. अम्बेडकर चिन्तन और विचार, एस. एन. प्रिन्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली, 2002, पृ0 . 213

5. गोरखपुर इस्लामियॉ कालेज से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका अल अजीज, सम्पादक मौलाना मोहीउद्दीन, नवम्बर 1939 से उद्धरित।

6. वर्मा, डा. वी. पी. : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2009, पृ0 923

7. डॉ. अम्बेड्कर सम्पूर्ण वाड्मय खण्ड–1, विरेन्द्र प्रिन्टर्स, करोलबाग, नई दिल्ली, 1995, पृ0 81

8. वर्मा, वी. पी. : आधुनिक भारतीय राजनीति चिन्तन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2009, पृ0 931

9. कुमार, पवन : भारतीय राजनीतिक विचारक, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 36–37

Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).